देहि- अभिमानी की जो प्रैक्टिस करते
पुण्य - आत्मा तब वो बन सकेंगे
वंडरफुल ड्रामा में सबका पार्ट है अपना
उसे देख सदा हर्षित हो रहना
देहि -अभिमानी होने की हुनर देहि सुप्रीम बाप सिखाते
देह- अभिमान में आकर डीस-सर्विस नही करनी
युक्ति युक्त हो बोल है बोलने
श्रापित बोल मुख से न निकले
कम बोलो, मीठा बोलो, धीरे बोलो
बोलो की एकानोमी कर महान आत्मा बनना
श्रीमत का हाथ सदा साथ जो रखते
सारा युग हाथ में हाथ फिर देकर चलेंगे

मेरा बाबा
ॐ शांति।